THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FOOD AND CIVIL SUPPLIES (SHRI D. L. BAITHA): NCCF have reported that the case after investigation has been found serious enough to warrant imposition of major penalty which is under process.

Mid-term review of pilot projects for Watershed Development in rain-fed areas

352. SHRI ARANGIL SREEDHARAN: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether a mid-term review was made of the World Bank-aided Pilot Projects for Watershed Development in the rain-fed areas in the Southern States of the country;

(b) if so, the salient features of the Review and the follow-up action taken by Government; and

(c) the funds earmarked during 1988-89 for Palghat in Kerala selected the above project?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF AGRICULTURE AND COOPERATION IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI SHYAM LAL YADAV): (a) Yes, Sir.

(b) The mid-term review was made to re-assess the concept, design, allocation of fund, staffing pattern, components, etc., in the light of the performance of the project during first three years.

The exercise included field visits and detailed discussions by officers of participating States of Andhra Pradesh, Karnataka, Madhya Pradesh and Maharashtra, Government of India and World Bank. In the light of lessons learned, more reliance would be placed on simple, replicable and cost effective technology based on vegetative measures, in-situ moisture conservation and appropriate cropping systems.

The review report has been sent to participating States for implementation.

(c) The Kerala State is not one of the participating States. Therefore, the question of earmarking funds to this State, does not arise.

इस्पात कारखानों में खनिजों का अंबार लग जाना

353. **श्री अजीत जोगी :**
श्री पृथ्वी मांझी :

क्या **इस्पात और खान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश के इस्पात कारखानों में कोक, नट कोक, कोक चूरा और रेत कोक, लौह अयस्क का महीन चूरा धमन भट्टी राख (ब्लास्ट फर्नेस डस्ट) तथा चूना पत्थर का चूरा जैसे खनिजों का बहुत बड़ा भंडार एक पहाड़ी के रूप में इकट्ठी होता जा रहा है और उनकी मात्रा में दिन प्रति दिन वृद्धि हो रही है ;

(ख) क्या इनकी मात्रा के संबंध में कोई अनुमान लगाया गया है, यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ;

(ग) क्या इस राष्ट्रीय संपत्ति को उपयोग में लाने के लिये कोई प्रस्ताव विचाराधीन है ; और

(घ) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है, और

(ङ) यदि इन खनिजों का मूल्य निरंक्य अर्थात् गणना में परे माना गया है तो इनका संग्रह किये जाते रहने के क्या कारण है ?

इस्पात और खान मंत्री (श्री माखन लाल फोतेदार) : (क) से (ङ) प्रश्न के भाग (क) में उल्लेखित सभी मदें, इस्पात संयंत्रों में प्रोसेस के दौरान मिलने वाली मदें और धातुकर्मीय अपशिष्ट

पदार्थ हैं । इनमें से कुछ मदों का सिन्टर बनाने में पुन: इस्तेमाल किया जाता है । कोक, कोक ब्रीज और नट कोक जैसी अन्य मदें अन्य उपभोक्ताओं को बेची जा रही हैं ।

"मेल" के इस्पात संयंत्रों में, सामान्य-तया प्रोसेस के दौरान प्राप्त होने वाली मदों को इकट्ठा नहीं किया जाता है । प्रचालनात्मक कारणों से, जहां कहीं मदों का कुछ ढेर लग जाता है, कार्रवाई की जाती है और नियंत्रण के अधीन रखे गए स्टाक समाप्त हो जाते हैं ।

हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड, रांची के लिए पिलेटाइजेशन योजना

354. **श्री अजीत जोगी :**
श्री पृथ्वी मांझी :

क्या **इस्पात और खान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड, रांची ने 1972 के आस-पास पिलेटाइजेशन संयंत्र की एक योजना तैयार की थी और उसके निर्माण के लिए अंतर्राष्ट्रीय निविदायें आमंत्रित की गई थी और उन में से एक निविदा को स्वीकृत भी किया गया था ;

(ख) यदि हां, तो अब इस योजना की प्रगति क्या है ;

(ग) क्या इस योजना को पूर्णतया त्याग दिया गया है ;

(घ) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं ; और

(ङ) इस योजना पर कुल कितनी राशि खर्च की गई है ?

इस्पात और खान मंत्री (श्री माखन लाल फोतेदार) (क) जी, नहीं ।

(ख) से (ङ) ये प्रश्न नहीं उठते ।

लाख के उत्पादन में कमी

355. **श्री अजीत जोगी :**
श्री पृथ्वी मांझी :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि पलाश के वृक्षों में पैदा होने वाले 'लाख' के उत्पादन में भारी कमी आयी है, जिसके परिणामस्वरूप, इस धन्धे में अपना गुजारा करने वाले अनेकों आदिवासियों और मजदूरों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ;

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार द्वारा इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कोई कदम उठाये गये हैं कि लाख के उत्पादन स्तर में कमी न आए ;

(ग) क्या सरकार को इस बात की भी जानकारी है कि इसके कारण मध्य प्रदेश के शहडोल जिले के उमरिया नगर स्थित चपड़ा कारखाने सहित लाख पर आधारित अनेक उद्योग बंद हो गए हैं; और

(घ) यदि हां, तो क्या सरकार द्वारा इन कारखानों को चालू करने की दिशा में कोई पहल की जा रही है ?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री श्याम लाल यादव) : (क) लाख का उत्पादन 1960-61 में 48000 मीटरी टन के औसत से घटकर इस समय 12000 मीटरी टन रह गया है । इस कमी के कारण इस प्रकार हैं :—

(1) उत्पाद के कम मूल्य ;

(2) मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियां

(3) विदेशों में इसकी मांग में कमी ।

(ख) पांच राज्यों में लाख विकास की एक केन्द्रीय प्रायोजित योजना शुरू की गई है ।